भोपाल । अध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात माननीय मुख्यमंत्री शिवराज चौहान के साथ ब्र.कु. रीना तथा अन्य।

मधुराइ। फ्युचर ऑफ पावर कार्यक्रम का अद्घाटन करते हुए युरोप की निर्देशिका , ब्र.कु. जयंती , , ब्र.कु. मीनाक्षी, नीझार जुम्मा, निर्देशक, फ्युचर आफ पावर कार्यक्रम, राजू मंत्री , तामिलनाडु।

बिलासपुर। योगभठ्ठी का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सूरज भाई, ब्र.कु. गीता, छत्तीसगढ के विधानसभाध्यक्ष धर्मलाल कौशिक।

सादडी । एस .डी. एम . चेनाराम चौधरी को ईश्वरीय सौगात देते हुए साथ ब्र.कु. स्नेहा साथ मे ब्र.कु. प्रकाश तथा ब्र.कु. चेतन।

सुनाम । डेप्यूटि कमीशनर संगरूर को ईश्वरीय सौगात देते हुए .ब्रह्माकुमारी बहने तथा अन्य।

सेंधवा । आशा दीदी के जयंति पर आध्यात्मिक परिचर्चा आये नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री , मध्य प्रदेश मनोहर उंटवाल , भाजपा अध्यक्ष एस. वीरास्वामी , नगर पालिका अध्यक्ष अरूण चौधरी, गायत्री धाम के प्रमुख मेवालालजी , ब्र.कु. प्रकाश ब्र.कु. छाया ।

ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय

पृष्ठ 1 का शेष

मंत्रमुग्ध । प्राचीन भारतीय संस्कृति से रूबरू कराते हुए रशिया से आए कलाकारों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। शिव परमपिता परमात्मा व देवियों की महिमा के गीतों पर भारतीय लिबास में नृत्य करते हुए रशियन कलाकारों ने उपस्थित जनसमुदाय को दांतो तले अंगुली दबाने को मजबूर कर दिया।

पीसपार्क माउंट आबू - पीसपार्क में दादी जानकी जी, दादी रतनमोहिनी जी, पार्क संचालक बी के किशोर भाई, बासंती बहन के नेतृत्व में बड़ी संख्या में भाई बहनों की उपस्थिति में दीवाली कार्यक्रम उमंग उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

आध्यात्मिक संग्रहालय माउंट आबू - इसी तरह सूर्यास्त दर्शन मार्ग स्थित संगठन के आध्यात्मिक संग्राहलय में दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी, संगठन महासचिव बी के निर्वैर भाई, म्युजियम प्रभारी बी के प्रतिभा बहन आदि ने दीपावली पर्व के रहस्यों पर प्रकाश डालते हुए ज्ञान दीप को सदैव प्रज्जवलित रखने पर बल दिया।

सर्व के सहयोग से कार्यक्रम संपन्न - पाण्डव भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन, ग्लोबल अस्पताल, पीसपार्क, म्युजियम, संगमभवन, ट्रॉमा सेंटर आदि विभिन्न स्थानों के बी के भाई बहनों के उमंग उत्साह व सहयोग से दीपावली के कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुए।

आध्यात्मिक शक्ति

पृष्ठ 5 का शेष

गई है? क्या उसने मान लिया है कि आध्यात्मिक शक्ति के चमत्कार केवल वही कुछ हैं, जो धर्म-पिताओं, ऋषियों-मुनियों संतों और महात्माओं ने समय प्रति समय दिखाये हैं? क्या इन चमत्कारों से होने वाली प्राप्ति से इंसान संतुष्ट हो गया है? स्पष्ट है कि मनुष्य की चाहना दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही गई है और आज का इंसान कलियुग के थपेड़ों से पीड़ित होकर पहले से भी ज्यादा किसी ऐसे चमत्कार की खोज में है जिससे उसके दु:खों का अंत हो जाये और सर्व कामनाओं की पूर्ति हो जाये। ऐसा सर्वोत्तम चमत्कार दिखाने वाली आत्मा भी परम या सर्वोत्तम ही होनी चाहिए और उस चमत्कार से होने वाली प्राप्ति भी सम्पूर्ण होनी चाहिए ताकि जिसके बाद मनुष्य की सर्व इच्छाओं का अंत हो जाये।

वह सर्वोत्तम आत्मा कौन है, और उसका चमत्कार कौनसा है? केवल इतना जान लेने से ही मनुष्यात्माओं को आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव होने लगता है। वह आत्मा है निराकार परमात्मा शिव। जिसके केवल अंश मात्र शक्ति का ही प्रदर्शन महान आत्माओं के द्वारा हो पाया है और जो अब स्वयं ही सृष्टि पर अवतरित होकर सर्वोत्तम शक्ति का वह चमत्कार दिखला रहे हैं, जिसके फलस्वरूप निकट भविष्य में फिर से सतयुगी राजकुमार श्रीकृष्ण का राज्य स्थापित होने वाला है। इन्हीं चमत्कारों की बदौलत ही ब्रह्माकुमारियां बहनें और ब्रह्माकुमार भाई तीनों लोकों और तीनों कालों और आने वाली स्वर्गमयी सृष्टि अथवा वैकुण्ठ का साक्षात्कार कर पाये हैं। इन्हीं चमत्कारी साक्षात्कारों एवं आध्यात्मिक शक्ति के अनुभवों के आधार पर अनेक आत्मायें चमत्कारी बन रही हैं। इन आत्माओं की विस्तृत व्याख्या क्या है यह अनुभव इन अनुभवी भाई-बहनों द्वारा ही सुना जा सकता है अथवा स्वयं अनुभव किया जा सकता है। क्योंकि सर्व आत्माओं के पिता सर्व शक्तिवान निराकार परमात्मा शिव की संतान होने के नाते ये हर आत्मा का जन्म सिद्ध अधिकार है।

मानवीय संवेदनाओं को बनाये रखें

अपने खुशी के इंडेक्स को देखते हुए हम अपनी श्रृंखला पर आगे बढ़ रहे हैं। बहुत सी बातें समझ में आयी और बहुत से सवाल अभी भी बचे हुए हैं। हम वो खुशी जिसको पाने के लिए सब कुछ कर रहे होते हैं, उसे क्रियेट कैसे किया जाता है तो इसका छोटा सा जवाब आता है कि उसे हम खुद क्रियेट कर सकते हैं। परिस्थिति चाहे कुछ भी हो, लोग चाहे कुछ भी कह रहे हो, फिर भी हम अपनी खुशी को क्रियेट कर सकते हैं। अगर ये इतना आसान है तो फिर हम अभी तक क्यों नहीं कर पा रहे थे। ऐसी बहुत सी बातें हैं, जिनको हम समझने का प्रयास करेंगे। अगर हम पिछली कड़ी को देखते हैं तो हमें समझ में आता है कि हर कोई खुशी के लिए कार्य कर रहा होता है। जबसे हमने इस श्रृंखला की बात की तो एक बात जो सामने आयी कि ये तो मेरी अपनी ही क्रियेशन है। अगर ये मेरी अपनी ही क्रियेशन है तो हम खुशी के लिए 'जरूरत से ज्यादा कार्य' क्यों करते हैं? इफ वी हैपी सी डूइंग और बीइंग ये दोनों दो चीजें हैं। बीइंग का अर्थ है 'मैं कौन हूँ' द बीइंग 'इनसाइड' और डूइंग का अर्थ है कि हम बाहर में क्या कर रहे हैं। एक है कि मैं खुश हूँ और एक है खुशी के लिए कुछ कर रही हूँ। ताकि मुझे खुशी मिले। तो कहीं-न-कहीं मुझे अंदर से खुशी का अनुभव नहीं हो रहा था इसलिए मैंने उसे बाहर ढूंढना शुरू कर दिया। सबसे पहले हमारी जो मान्यता थी उसमें खुशी को हम भविष्य में ढूंढते थे। अगर हम अपनी भाषा को भी देखें तो हम यही कहते हैं कि ये होगा... तो मैं खुश हो जाऊंगी। आज यदि हम अपने विद्यार्थी जीवन में भी पीछे मुड़कर देखें तो उस समय हम यही कहते थे कि 'स्टूडेंट लाइफ इज द बेस्ट लाइफ'। जब हम स्टूडेंट लाइफ में होते हैं तो यही कहते हैं कि जब हमारी स्कूल की पढ़ाई खत्म हो जायेगी, जब मैं कॉलेज में जाऊंगी या जब मुझे जॉब मिल जायेगी तब मैं खुश होऊंगा। जैसे ही मैंने ये कहा कि जब ये होगा... तब मैं खुश होऊंगी तो इसका मतलब है कि मैं अभी खुश नहीं हूँ। अब तो हमारी पढ़ाई भी समाप्त हो गयी, फिर हम प्रोफेशन में आ गये, फिर हमने सोचा कि जब कोई अच्छा जीवन साथी मिल जाये... तब मैं खुश होऊंगी। फिर वो रिश्ता हुआ तो हमने कहा की जब हमारी

फैमली हो जायेगी तब मैं खुश हो जाऊंगी तो इसका मतलब है कि हर बार हमारी खुशी स्थागित होती गयी अब ये कब होगी?

प्रश्न:- मैंने सोचा कि एक स्टेज आयेगी तब मुझे खुशी मिलेगी। जब यह नहीं हो रहा होता है तो लगता है कि आगे और कुछ नहीं है तब हम पीछे देखना शुरू करते हैं!

उत्तर:- तब हम कहते हैं कि वो वाले जो दिन थे ना, बहुत अच्छे थे। मैं प्रेजेंट में हूँ और मैं खुशी को जो होने वाला है या फिर जो हो गया उसमें ढूंढते हैं। अगर मैं यहां खड़े होकर कह रही हूँ कि जो हो गया वह बहुत अच्छा। क्योंकि उस समय मैं इस थॉट के साथ बैठा हूँ कि जब ये होगा, तब मैं खुश हो जाऊंगी। प्रेजेन्ट में रहकर हम हर मोमेंट में या तो बीते हुए पल के बारे में सोच रहे होते हैं या फिर आने वाले पल के बारे में। जब हम इसे कई बार सुनते हैं तो लगता है कि 'मैं ऐसा नहीं सोचती हूँ लेकिन मैं इसे पसंद करती हूँ'। यदि एक दिन आप अपने थॉट्स को चेक करें तो आप पायेंगे कि वो या तो बीती हुई बात से सम्बन्धित होती है या फिर आने वाले समय से सम्बन्धित होती है। फिर हम खुशी के लिए उस पर निर्भर हो जाते हैं कि कुछ नया होगा तब मुझे खुशी मिलेगी, तो इस तरह से हर बार हमारी खुशी स्थगित होती रहती है। इस प्रक्रिया में मेरा एक-एक पल बितता गया ये कहते हुए कि अगले पल वो खुशी आने वाली है, जब कुछ ऐसा होगा तब मुझे खुशी मिलेगी। आपने देखा होगा कि हमारी खुशी प्राप्ति पर, हम जो काम करते हैं उस पर, लोगों के व्यवहार पर, हमारे शारीरिक साधनों पर निर्भर थी, अगर हम एक सेकण्ड इस बात पर सोचें की अगर हमारी कोई चीज किसी पर निर्भर है तो मुझे कैसा अनुभव होगा...! जब हमारी किसी चीज पर निर्भरता है तो हम खुश कैसे रह सकते हैं! जिसको ये समझ में आ गया उसको ये भी समझ में आ जायेगा कि जब तक निर्भरता है तब तक आप खुश नहीं रह सकते हैं।

प्रश्न:- क्योंकि भय और खुशी का अंत भी तो है।

उत्तर:- भय और खुशी दोनों एक साथ नहीं रह सकते हैं। यदि हम डर में हैं तो खुश नहीं हो सकते हैं। आज हमारी खुशी बहुत सारी चीजों पर, लोगों पर निर्भर हो गयी है जिसके कारण हम डर में रहते हैं। मान लीजिए की हमारी खुशी आप पर निर्भर है तो मैं हमेशा डर में रहूंगी कि ये ठीक है, ये मेरे से नाराज तो नहीं हुए, ये खुश है ना, ये संतुष्ट है ना, मैं इनको खुश रखने के लिए क्या करूं, तो यह भय है, असुरक्षा है। जहां निर्भरता होगी वहां असुरक्षा की भावना तो होगी ही। अगर मेरी खुशी साधनों पर निर्भर है तो हम सारा दिन इसके बारे में ही सोचते रहेंगे तो हमारा फोकस किस पर होगा?

- क्रमश: